website: www.pawanprawah.com
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2018-2020
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
पवन प्रवाह
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक
एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

प्रयागराज का धार्मिक/सांस्कृतिक परिप्रदेश

हम पूर्व अंक-10 मे विश्व के सबसे बड़े कुम्भ महोत्सव के बारे मे वैज्ञानिक कारणो को जानने हेतु एस.एम.एस. द्वारा गठित समूह व उसके अध्ययन के निष्कर्स, कुम्भ महोत्सव के धार्मिक पक्ष तथा राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता में प्रयागराज तीर्थ स्थल की भूमिका के विषय मे जानकारी प्राप्त की। इस अंक मे हम तीर्थ एवं श्रद्धा का स्थानिक विसरण को जानने का प्रयास करेंगे।

भाग-11

गतांक से आगे

तीर्थ 'श्रद्धा' के केन्द्र होते हैं। यहाँ पर विभिन्न संस्कारों एवं धार्मिक कृत्यों हेतु समीपवर्ती क्षेत्रों से लोगों का गमनागमन होता है। तीर्थ केन्द्र समीपवर्ती क्षेत्रों के श्रद्धा के स्तर से ही उत्पन्न होते हैं, जीवन धारण करते हैं और महत्वहीन हो जाते हैं। इस प्रकार तीर्थ केन्द्रों के यही समीपवर्ती क्षेत्र तीर्थ केन्द्रों के परिप्रदेश कहे जाते हैं। तीर्थ केन्द्र इलाहाबाद (प्रयाग) पर भारत के सुदूरवर्ती क्षेत्रों तथा विश्व के देशों से भी लोग आते हैं। महाकुम्भ (जो 12 वर्ष के अन्तराल पर होता है) के समय विश्व के अनेक देशों के लोग यहां आते हैं। अतः इसका परिप्रदेश बहुत ही विस्तृत है। इस कारण का परिप्रदेश निर्धारण असम्भव नहीं तो कठिन साध्य है। किन्तु शोधकर्ता ने इस केन्द्र पर सम्पन्न होने वाले धार्मिक कृत्यों के लिये आने वाले लोगों के परम्परागत रूप से निर्धारित परिक्रमा मार्गों तथा मात्रात्मक तकनीक के माध्यम से इस केन्द्र का परिप्रदेश निर्धारण करने का प्रयास किया है। तीर्थ कार्यों की गहनता के आधार पर प्रयाग के परिप्रदेश को दो भागों में बांटा गया है। मुख्य परिप्रदेश एवं गौड़ परिप्रदेश। मुख्य परिप्रदेश में कार्य की गहनता एवं यात्रियों की संख्या अधिक होती है तथा यह कार्य नियमित प्रतिदिन होता है तथा गौड़ परिप्रदेश में कार्य की गहनता, यात्रियों की संख्या तथा धार्मिक कार्यों का सम्पादन नियमित नहीं होता है। इलाहाबाद के धार्मिक/सांस्कृतिक परिप्रदेश के निर्धारण की तीन विधियां हैं।

परम्परागत विधि

इसमें प्राचीन काल से ही तीर्थयात्रियों द्वारा परम्परा रूप से सम्पादित इलाहाबाद की परिक्रमा मार्गों को सम्मिलित किया गया है। इसमें प्रयाग की अन्तर्वेदी, मध्यवेदी एवं बहिर्वेदी परिक्रमा मार्ग की समीएं प्रयाग का परिप्रदेश निर्धारित करती है। इसे प्रयाग मण्डल भी कहा जा सकता है। इस विधि का प्रयोग करते हुए राणा पी0बी0 सिंह ने वाराणसी के तीर्थ मण्डल का निर्धारण किया है।

प्रयाग अर्थात् प्रजापति क्षेत्र की सीमा युगों के अनुसार घटती बढ़ती रही है। सतयुग में चारों धाम इसकी सीमा थे। इसी प्रकार त्रेता एवं द्वापर में अयोध्या, चित्रकूट सभी इस क्षेत्र की सीमा में अवस्थित थे।प्रयाग में तीन प्रकार की परिक्रमायें परिकल्पित हैं- विस्तृत (बहिर्वेदी), मध्यम (मध्यवेदी) तथा संक्षिप्त (अन्तर्वेदी)। इन परिक्रमाओं कीवर्तमान में अक्षयवट (संगम) से चारों ओर क्रमशः दूरी दस कोस अर्थात् 32 किमी0, पांच कोस अर्थात् 16 किमी0 तथा ढ़ाई कोस अर्थात् 8 किमी0 है। प्रयाग क्षेत्र की पंचकोसी परिक्रमा पुराणों में स्पष्ट रूप से सीमांकित की गई है। जहाँ तक प्रसिद्ध तीर्थ बताये गये हैं, वहीं वास्तविक पंचकोसी की सीमा और परिक्रमा मानी जा सकती है। अन्तर्वेदी परिक्रमा के मुख्य स्थल त्रिवेणी, अक्षयवट, धृतकुल्या, आदित्यतीर्थ, रामतीर्थ, कामेश्वर तीर्थ (मनकामेश्वर), वरुआघाट, चक्रतीर्थ, ललिता तीर्थ (ललिता देवी), भारद्वाज आश्रम, द्रौपदी घाट, शिवकोटि, नागवासुकि, दशाश्वमेध, वेणीमाधव, लक्ष्मीतीर्थ, सोमतीर्थ, अक्षयवट तथा संगम हैं।

मध्य वेदी स्थल- वेणीमाधव, हनुमान कुण्ड, सीताकुण्ड, वरुणतीर्थ, यमतीर्थ, चक्रमाधव, सोमतीर्थ, सूर्यतीर्थ, कुबेर तीर्थ, अग्नितीर्थ, शूलटंकेश्वर तथा त्रिवेणी हैं।

बहिर्वेदी स्थल- त्रिवेणी, समुद्रकूप, ऐल तीर्थ, नलतीर्थ, ब्रह्मकुण्ड, शाल्मली तीर्थ, उर्वशीतीर्थ, अरुन्धती तीर्थ, मानस तीर्थ, शंखमाधव, व्यास आश्रम तथा त्रिवेणी हैं।

(अ) प्रयाग में पंचकोशी परिक्रमा का क्रम और मार्ग

पहले दिनः- त्रिवेणी स्नान, देव पूजन और प्रतिज्ञा संकल्प कर अक्षयवट का पूजन करने के पश्चात् यमुना के पार में शूलटंकेशवर का दर्शन-पूजन होता है। अनन्तर सुधारस तीर्थ, उर्वशी कुण्ड का स्मरण कर आदि वेणी माधव का दर्शन सम्पन्न होता है। तट भाग से हनुमान तीर्थ, सीता कुण्ड आदि वेणी माधव का दर्शन किया जाता है। तट भाग से हनुमान तीर्थ, सीता कुण्ड, रामतीर्थ, वरुण तीर्थ, चक्रमाधवादि को प्रणाम कर सोमेश्वरनाथ जी के क्षेत्र में उस रात्रि निवास किया जाता है।

दूसरे दिनः- तट भाग से सोमतीर्थ, सूर्यतीर्थ, कुबेरतीर्थ, वायुतीर्थ, अग्नितीर्थ

प्रभृति को प्रणाम कर महाप्रभु बल्लभाचार्य जी का बैठक में होकर नैनी गाँव में जाकर गदा माधव का और सैनी में कम्बलाश्वतर तीर्थ का दर्शन करने के पश्चात् रामसागर में उस रात्रि निवास किया जाता है।

तीसरे दिनः- वीकर देवरिया देवरख में यमुना जी के तट भाग में निवास करने के उपरान्त इस स्थान में श्राद्ध करने का अनन्त फ्ल होता है। इसलिए यहाँ श्राद्ध किया जाता है।

चौथे दिनः- यमुना पार में वनखंडी शिवजी के क्षेत्र में अथवा वेगमराय में रात्रि को निवास होता है।

पाँचवें दिनः- नीम घाट होकर द्रौपदी घाट में जाकर निवास किया जाता है।

छठवें दिनः- शिवकोटि तीर्थ में रात्रि में निवास होता है।

सातवें दिन :- पड़िला महादेव जी का दर्शन कर मानस तीर्थ में जाकर रात्रिनिवास किया जाता है।

आठवें दिनः- झूँसी होकर नागतीर्थ या शंखमाधव के समीप जाकर रात्रि में निवास किया जाता है।

नवें दिन :- नागतीर्थ, संघ माधव, व्यासाश्रम, समुद्रकूप, ऐलीतीर्थ, संकटहरमाधव, सन्ध्यावट, हंसकूप, हंसतीर्थ, ब्रह्मकुण्ड, उर्वशीतीर्थ और अरुन्धती तीर्थ होते हुए झूँसी में रात्रि विश्राम करने का प्रावधान है।

दसवें दिनः- त्रिवेणी में जाकर बहिर्वेदी की परिक्रमा कर उस जगह रात्रि में निवास करने का प्रावधान है।

ग्यारहवें दिनः- अन्तर्वेदी की परिक्रमा कर उसी जगह रात्रि में निवास करने का प्रावधान है।

बारहवें दिन :- त्रिवेणी में स्नान कर वट वृक्ष का पूजन होता है। पश्चात् मधुकुल्या, घृतकुल्या, निरंजनतीर्थ, आदित्यतीर्थ, ऋणमोचन तीर्थ, पापमोचन तीर्थ, गोदोहन तीर्थ, सोमतीर्थ, सरस्वती कुण्ड, कामेश्वर तीर्थ, बरुआघाट, तक्षकेश्वर, तक्षक कुण्ड, कालियादह, वक्रतीर्थ, सिन्धुसागर तीर्थ, पाण्डवकूप और वरुणकूप होकर द्रव्येश्वरनाथ का दर्शन करते हुए सूर्यकुण्ड में जाप और उस दिन भरद्वाजाश्रम में रात्रि में निवास होता है। प्रातः काल नागवासुकि तथा वेणीमाधव का दर्शन कर दशाश्वमेघ घाट जाकर शिवजी का दर्शन और वहाँ से लक्ष्मी तीर्थ, उर्वशीतीर्थ, दत्ततीर्थ, सोम दुर्वासा और हनुमान जी होकर त्रिवेणी तट पर जाकर परिक्रमा समाप्त होता है। पश्चात् यथाशक्ति गोदान और ब्राह्मण भोजन कराने का विधान है। अनन्तर विष्णु भगवान का स्मरण कर उन्हीं को परिक्रमा आदि सब अर्पण कर दें। चैत्र कृष्ण की तृतीया से अमावस्या तक 12 दिन की परिक्रमा हर साल करनी चाहिए अथवा डेढ़ दिन की परिक्रमा होनी चाहिए। जो लोग डेढ़ दिन में परिक्रमा करना चाहते हैं, वे अन्तर्वेदी की परिक्रमा करें (श्री रामलीला स्मारिका 2000 (इक्कीसवां पुष्प), कुम्भ अंक (पृ0 185, 186))।

अनुभवात्मक या गुणात्मक विधि

इसमें प्रयाग केन्द्र में संचालित होने वाले धार्मिक कृत्यों, संस्कारों आदि कार्यों को आधार बनाया गया है। इसमें प्रयाग में मुण्डन संस्कार, दाहसंस्कार, मकर संक्रान्ति तथा माघ मेला में आने वाले यात्रियों के आधार पर प्रयाग के धार्मिक परिप्रदेश का निर्धारण किया गया है। इसमें मुण्डन संस्कार, दाह संस्कार हेतु आने वाले लोगों के जिलों की सीमाएं इसकी प्रधान सीमा बनाती हैं जबकि गौड़ सीमा का निर्धारण विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले कल्पवासियों के जिलों की सीमा से होता है। इसमें इलाहाबाद (प्रयाग) में सम्पन्न होने वाले कार्यों में से तीन कार्यों को सम्मिलित किया गया है। मुण्डन संस्कार, दाह संस्कार एवं कल्पवास में आने वाले यात्रियों के जिलों के सीमाओं के आधार पर निर्धारण किया जाता है। इसमें शोधकर्ता ने आंकड़ों के संकलन हेतु दो वर्षों (2007-2008) में संगम पर आने वाले लोगों के सर्वेक्षण से किया है। मुण्डन संस्कार एवं दाह संस्कार हेतु आने वाले प्रत्येक कार्य हेतु 1600 लोगों के सर्वेक्षण किये गये हैं। इसमें प्रश्नावली के माध्यम से उनके कार्य के उद्देश्य एवं उनके गाँव एवं जिलों को पूछकर उसके आधार पर प्रयाग के परिप्रदेश का निर्धारण किया गया है। मुण्डन संस्कार हेतु आने वाले लोगों का सर्वेक्षण संगम पर किया गया है जबकि दाह संस्कार हेतु आने वाले लोगों का सर्वेक्षण दारागंज एवं रसूलाबाद घाट पर किया गया है।

मुण्डन संस्कार हेतु आने वाले लोगों के सर्वेक्षण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि यहाँ पर इस कार्य हेतु आने वाले 85 प्रतिशत लोग इलाहाबाद एवं उसके समीपवर्ती जिलों के होते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य मुण्डन संस्कार ही होता है जबकि 15 प्रतिशत लोग उत्तर प्रदेश के दूरस्थ जिलों या दूसरे प्रदेश के होते हैं जिनका उद्देश्य संगम स्नान, तीर्थभ्रमण तथा मुण्डन संस्कार होता है। ऐसे लोग यहाँ आकर एक या दो दिन निवास करते हैं तथा तीर्थ भ्रमण करने के बाद पुनः समीपवर्ती तीर्थों- वाराणसी, चित्रकूट, अयोध्या आदि चले जाते हैं। पूर्व में बताये गये 85 प्रतिशत इलाहाबाद जिले के सीमाओं से मिलने वाले उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं बिहार के जिले के होते हैं। इनमें उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद, प्रतापगढ़, रायबरेली, फ्तेहपुर, कौशाम्बी, चित्रकूट, रीवा, सतना, सीधी (मध्य प्रदेश), मिर्जापुर, सोनभद्र, भदोही एवं जौनपुर जिले के लोग सम्मिलित हैं। ये लोग मुण्डन संस्कार सम्पन्न करने के बाद शाम तक अपने घर लौट जाते हैं। यहां से किसी अन्य तीर्थों पर नहीं जाते हैं, ये विशेषकर मध्यमवर्गीय अथवा निम्न आयवर्ग के लोग होते हैं।

दाह संस्कार हेतु आये लोगों के सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि इनमें से 98 प्रतिशत लोग प्रतापगढ़, कौशाम्बी, भदोही, मिर्जापुर, रीवा, चित्रकूट कर्वी, जौनपुर, रायबरेली, फ्तेहपुर, बांदा से सम्बन्धित हैं, जो सुबह इस कार्य हेतु आते हैं तथा शाम तक अपने घर लौट जाते हैं। शेष 2 प्रतिशत लोग अत्यधिक सम्भ्रान्त परिवार से सम्बन्धित होते हैं जिनका निवास स्थान प्रयाग में ही है। मध्य प्रदेश से सबसे अधिक लोग अस्थि विसर्जन के लिये आते हैं, ऐसा दूरी के कारण है।

इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि दो कार्यों से इलाहाबाद (प्रयाग) के धार्मिक/सांस्कृतिक परिप्रदेश की सीमा के अन्तर्गत इलाहाबाद, प्रतापगढ़, जौनपुर, भदोही, मिर्जापुर, रीवा, चित्रकूट, कौशाम्बी, फ्तेहपुर और बांदा जिले सम्मिलित हैं और यह प्रयाग का मुख्य धार्मिक/सांस्कृतिक परिप्रदेश है। प्रयाग के गौड़ धार्मिक/सांस्कृतिक परिप्रदेश के निर्धारण में माघ मेला में आने वाले ऐसे लोगों का सर्वेक्षण किया गया है जो विगत पांच वर्षों से कल्पवास के लिये आते हैं और आगे भी आयेंगे। इसमें 2007 एवं 2008 में प्रतिवर्ष 1500 लोगों का सर्वेक्षण किया गया है। इसमें 70 प्रतिशत लोग इलाहाबाद, प्रतापगढ़, जौनपुर, सुल्तानपुर, भदोही, वाराणसी, रायबरेली, मिर्जापुर, गाजीपुर, सोनभद्र, रीवा, कौशाम्बी, चित्रकूट, फ्तेहपुर के सम्मिलित हैं। 20 प्रतिशत लोगों में गाजीपुर, बलिया, देवरिया, गोरखपुर, महाराजगंज, बस्ती, सिद्धार्थनगर, अम्बेडकर नगर, फैजाबाद, लखनऊ, उन्नाव, हमीरपुर, महोबा, चन्दौली जिले के लोग सम्मिलित हैं। शेष 10 प्रतिशत में मध्य प्रदेश के छतरपुर, सतना, सीधी, पन्ना आदि जिले तथा उत्तर प्रदेश के सीमा से सटे बिहार के जिले एवं उत्तर प्रदेश के सुदूर पश्चिमी जिले सम्मिलित हैं।

कुम्भ के बारे मे अधिक जानकारी अगले अंक में...